SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

पश्चिमी चम्पारण जिला के मानव संसाधन विकास का एक भौगोलिक अध्ययन

दीपक रंजन, भूगोल विभाग,
पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author :
दीपक रंजन, भूगोल विभाग,
पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 11/09/2020
Revised on : -----
Accepted on : 18/09/2020
Plagiarism : 04% on 12/09/2020

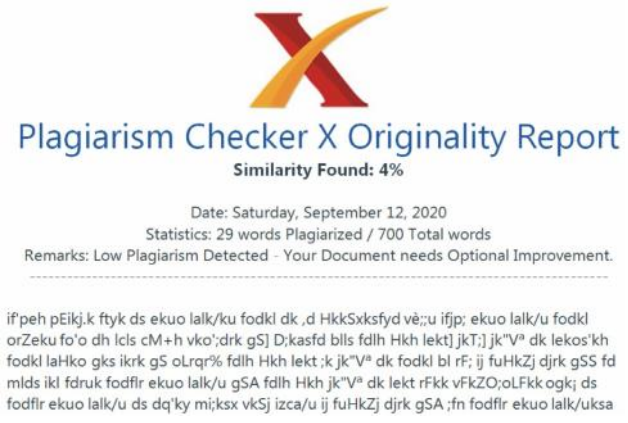
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 4%

Date: Saturday, September 12, 2020
Statistics: 29 words Plagiarized / 700 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

if'peh pEikj.k ftyk ds ekuo lalk/ku fodkl dk ,d HkkSxksfyd vè;;u ifjp; ekuo lalk/u fodkl orZeku fo'o dh lcls cM+h vko';drk gS] D;kasfd blls fdlh Hkh lekt] jkT;] jk"Vª dk lekos'kh fodkl laHko gks ikrk gS oLrqr% fdlh Hkh lekt ;k jk"Vª dk fodkl bl rF; ij fuHkZj djrk gSS fd mlds ikl fdruk fodflr ekuo lalk/u gSA fdlh Hkh jk"Vª dk lekt rFkk vFkZO;oLFkk ogk¡ ds fodflr ekuo lalk/u ds dq'ky mi;ksx vkSj izca/u ij fuHkZj djrk gSA ;fn fodflr ekuo lalk/uksa

शोध सार

मानव संसाधन विकास वर्तमान विश्व की सबसे बड़ी आवश्यकता है, क्योंकि इससे किसी भी समाज, राज्य, राष्ट्र का समावेशी विकास संभव हो पाता है वस्तुतः किसी भी समाज या राष्ट्र का विकास इस तथ्य पर निर्भर करता है कि उसके पास कितना विकसित मानव संसाधन है। किसी भी राष्ट्र का समाज तथा अर्थव्यवस्था वहाँ के विकसित मानव संसाधन के कुशल उपयोग और प्रबंधन पर निर्भर करता है। यदि विकसित मानव संसाधनों का कुशल उपयोग किया जाय तो राष्ट्र के प्राकृतिक संसाधनों के साथ–साथ अन्य संसाधनों का अनुकूलतम उपयोग हो सकता है।

मानव संसाधन जनसंख्या के बारे में बताता है इस वजह से मानव संसाधन विकास मानव की दक्षता, शैक्षणिक गुण, उत्पादकता तथा संगठनात्मक क्षमता के विकास में मदद करता है, विकास जितना जनसंख्या को प्रभावित करता है, उतना ही जनसंख्या विकास को प्रभावित करता है। मनुष्य आर्थिक क्रिया का उत्पादक, उपभोगकर्ता और सर्जक है।

मुख्य शब्द

मानव संसाधन, जनसंख्या, राष्ट्र, विकास।

मानव संसाधन विकास की अवधारणा

मानव संसाधन कृषि कार्य शुरू होने से पहले व्यवसाय तथा संगठनों का हिस्सा रहा है। सन् 1900 के प्रारंभ से ही उत्पादन क्षमता को बढ़ाने के उपायों पर ध्यान देने के साथ ही मानव संसाधन की आधुनिक अवधरणा सामने आयी। अमेरिका में कारखाने में उसके पहले मानव को कल–पूर्जों के समान ही बदले जाने की प्रवृति थी लेकिन नई अवधारणा के बाद इस तथ्य पर जोर दिया जाने लगा कि मानव को कल–पूर्जों के समान बदला नहीं जाय। बल्कि इनके कार्य क्षमता में वृद्धि की जाय।

मानव संसाधन विकास का अर्थ ऐसा मानव उपलब्ध कराना है, जो कुशल, शिक्षित, अनुभवी तथा हुनर युक्त हो, जो अपनी कुशलता, शिक्षा तथा अनुभव के द्वारा राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीति के विकास में अमूल्य योगदान दे सके।

मानव संसाधन विकास और मानव संसाधन विकास सूचकांक का मूल स्रोत संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम की 1992 के मानव विकास रिपोर्ट में पाया जाता है। मानव विकास सूचकांक के विकास की शुरूआत पाकिस्तानी अर्थशास्त्री महबबुल हक ने सन् 1990 में वैकल्पिक अर्थशास्त्र पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए आय गणना प्रणाली के स्थान पर जन केन्द्रित नीतियों पर जोर देने के लिए किया था।

अध्ययन क्षेत्र

इस शोध पत्र के लिए अध्ययन क्षेत्र बिहार के पश्चिमी चम्पारण जिला को चुना गया है, पश्चिमी चम्पारण जिला के पश्चिमी भाग में उत्तर प्रदेश, दक्षिण में गोपालगंज, पूर्व में पूर्वी चम्पारण तथा उत्तर में नेपाल स्थित है। ^{0} 40′ 15′′ उत्तर से लेकर 27^0 31′ 15′′ उत्तरी अक्षांश तथा 85^0 50′ 30′′ पूर्वी देशान्तर से लेकर 85^0 18′ 30′′ पूर्वी देशान्तर के मध्य विस्तृत है। 2011 के जनगणना के अनुसार इसका जनसंख्या 39,22,780 है इसका साक्षरता 58.06 प्रतिशत है। पश्चिमी चम्पारण जिला का मुख्य समस्या मानव संसाधन का अविकसित होना।

शोध का उद्देश्य

शोध का उद्देश्य मानव संसाधन का वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करना।

आँकड़ो का स्रोत एवं विधि तंत्र

शोध में जनसंख्या भूगोल के अध्ययन विधियों में प्रयुक्त किये जाने वाले तकनीकों का यथा संभव उपयोग किया गया है। अध्ययन के निष्कर्ष पर पहुँचने हेतु क्रमबद्ध उपागम को अपनाया गया है। मानव संसाधन विकास के विश्लेषण के लिए शीर्षकीय विधि तंत्रा विश्लेषण तथा व्यवहारिक विधियों का भी प्रयोग किया गया है। तथ्य को स्पष्ट करने के लिए सांख्यिकीय विधि तथा सम्पन्न फिल्ड सर्वे का उपयोग किया गया है। आँकड़ो के एकत्रीकरण के लिए जिला सांख्यिकी विभाग तथा फिल्ड सर्वे का सहायता ली गई है। इस शोध में गुणात्मक एवं मात्राात्मक विश्लेषण दोनों का प्रयोग किया गया है। शोध के लिए पश्चिमी चम्पारण जिला के 6 प्रखंड का चयन, सामाजिक आर्थिक आधार पर किया गया है। शोध में मानव संसाधन विकास को मापने के लिए मानव विकास सूचकांक को आधार बनाया गया है।

मानव संसाधन विकास का चार्ट

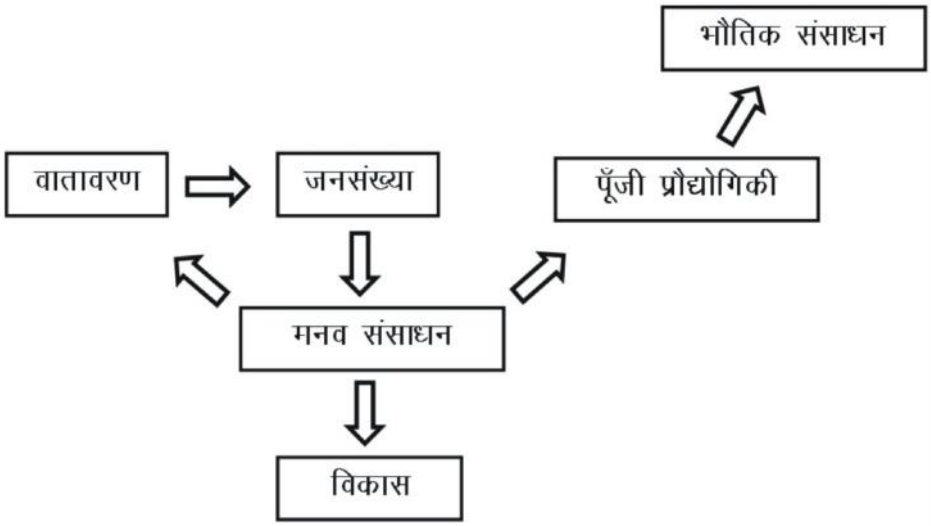

स्रोत : जनांकिकी डॉ0 विमल कुमार, डॉ0 एस एन गुप्ता 2005, पृष्ठ संख्या – 04

निष्कर्ष

शोध के प्राप्त परिणाम के अनुसार पश्चिमी चम्पारण जिला का मानव संसाधन विकास पिछड़ी अवस्था में है तथा इसका सूचकांक 0.508 है यह बिहार 2015 के मानव विकास सूचकांक 0.556 से कम है। पश्चिमी चम्पारण जिला के मानव संसाधन विकास का पिछड़ा होने का मूल कारण शिक्षा, स्वास्थय सम्बन्धी आधारभूत संरचना की कमी है।

मानव संसाधन विकास के लिए सुझाव

1. प्रारंभिक, माध्यमिक तथा उच्चस्तर पर शिक्षा के विकास के द्वारा।
2. स्वास्थ्य सुविधओं को उपलब्ध कराकर।
3. कार्यस्थल पर प्रशिक्षण का सुविधा उपलब्ध कराकर।
4. गुणवत्ता पूर्वक तकनीकि शिक्षा उपलब्ध कराकर।
5. खेल गतिविधियों के विकास के द्वारा।

सन्दर्भ सूची

1. *राय, जय प्रकाश, (1981), जनसंख्या विश्लेषण : बिहार का एक प्रतीक अध्ययन, उत्तर भारतीय भूगोल परिषद् गोरखपुर अंक XV-III भाग–2 पृष्ठ 22–128।*
2. *नेडलर L ED, 1984 मानव संसाधन के विकास में पुस्तिका जौन विले एवं सन्स न्यूयार्क।*
3. *मैक्सील G.N उस्मान गनी, A.M Cho (Eds), (2004), राष्ट्रीय नीति के रूप में मानव संसाधन विकास में अग्रणी अगस्त 2004।*
4. *सिंह काशीनाथ एवं जगदीश (1976) : आर्थिक भूगोल के मूल तत्व, तारा पब्लिकेशन, वाराणासी।*
5. *मानव विकास रिपोर्ट, 2018, UNDP.*
6. *मानव विकास प्रतिवेदन, (2005), ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली।*
7. *हुसैन माजिद, (2008), : मानव भूगोल, रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली।*

****